ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बर: 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

miegkfun'kd ¼—f"k ekSle foKku½] Hkkjr ekSle foKku foHkkx] iq.ks   funs'kd] ekSle dsUnz] ngjknwu

o"k% 27	vad% 97	cqysfVu vof/k% 8 & 12 fnlEcj] 2018	fnu% 'kqØokj	fnukad% 07 fnlEcj] 2018

ekSle iwokZuqeku%

भारत सरकार के iFoh foKku ea=ky; द्वारा वित्त पोषित एवं Hkkjr ekSle foKku foHkkx द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत jk"Vªh; ekSle iwokZuqeku dsUnz] Hkkjr ekSle foKku foHkkx] ekSle Hkou] ubZ fnYyh द्वारा पूर्वानुमानित तथा ekSle dsUæ] ngjknwu द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा uSuhrky ftys es vxys ikap fnuks में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

iwokZuqekfur ekSle rRo	ekSle iwokZuqeku&uSuhrky				
	08/12/2018	09/12/2018	10/12/2018	11/12/2018	12/12/2018
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	1
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	13	13	13	12	12
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	13	13	12	12	12
बादल आच्छादन	आंशिक बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल	मध्यम बादल	घने बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	80	80	85	90	90
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	40	40	45	45	45
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	006	004	006	0004	006
वायु की दिशा	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (30 नवम्बर – 6 दिसम्बर, 2018 सुबह 8:30 तक) में आसमान में आंशिक बादल छाये रहे तथा अधिकतम तापमान 15.5 से 17.6 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 3.8 से 6.0 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

Ñf"k ekSle ijke'kZ

Qly çcU/k%

- ❖ भावर क्षेत्र में गेहूँ की विलम्ब से बुवाई 25 दिसम्बर तक करे। देर में बोई जाने वाली प्रजातियॉ यू0पी0 2425 यू0पी 2328, पी0बी0डब्लू 373, यू0पी0 2526, यू0पी0 2565 की बुवाइ करे।
- ❖ चौड़ी पत्ति एवं घास वर्ग के खरपतवार के नियंत्रण हेतु वेस्टा की 400 ग्रा0 मात्रा का 700 ली0 पानी मे घोल बनाकर 1 हेक्टेयर में बुवाई के 30–35 दिन बाद छिड़काव करे।
- ❖ टोटल (या सल्फोसल्फोरॉन एवं मेटसल्फयूरॉन मिथाईल) 40 ग्रा0 मात्रा को 700 ली0 पानी में घोलकर बनाकर 25–30 दिन बाद/हेक्टेयर में छिड़काव करे।

- पाला/कोहरा पड़ने की स्थिति में समय–समय पर सिंचाई करें।
- गेहूँ के बीज का टाइकोडर्मा 5 ग्राम + सूडोमोनास 5 ग्राम/1 ग्राम बीज की दर से उपचारित करें।
- किसान भाई अपने क्षेत्रों के लिए अनुमोदित प्रजातियों की ही बुवाई करें।
- जैविक खेती करने वाले किसान भाई सभी फसलों हेतु ट्राइकोडर्मा हरजियानम + सोडोमोनास के 5–5 ग्राम/कि0ग्रा0 बीज के हिसाब से बीज उपचार करें। तथा पोषक तत्वों की पूर्ति वर्मीकम्पोस्ट या सड़ी हुई गोबर की खाद एवं जैव उर्वरक के द्वारा करें। भूमजनित बीमारियों की रोक–थाम के लिए 250ग्राम ट्राइकोडर्मा + 250 ग्राम सोडोमोनास जैव अभिक्रता से प्रति क्विंटल की दर से वर्मीकम्पोस्ट एवं गोबर की खाद को उपचारित कर एक सप्ताह के लिए छाया में रखें तथा बुवाई से पूर्व खेत में अच्छी प्रकार से मिला दें।
- दलहनी फसलों में खरपतवार नियंत्रण हेतु अगर मजदूर उपलब्ध हों तो पहली निराई, बुवाई के 20–25 दिन बाद और दूसरी 35–40 दिन बाद करें।
- चनें में सिंचित दशा में फ्लूक्लोरोलिन 1.7 लीटर अथवा ट्राईफलूरोलिन शाखनाशी की 1.5 लीटर मात्रा को 800 लीटर पानी में घोल बनाकर बुवाई से पूर्व छिड़काव करने से खरपतवारों का नियंत्रण हो जाता है।

m|kuçcU/k%

- टमाटर में पीलापन लिए हुए भूरे धब्बे दिखाई देने पर मैन्कोजेब 2.5 से 3.0 ग्राम प्रति लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- मटर में पौधों की सूखने एवं निचली पत्तियां पीले पड़ने की अवस्था में कार्बन्डाजिम 1.0 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर जड़ों की सिंचाई करें ।
- सिंचित घाटी क्षेत्रो में यदि सब्जी फ्रासबीन की बुवाई दो माह पूर्व की गई हो तो तैयार फलियो की तुड़ाई करें।
- मध्यम पर्वतीय ओला रहित क्षेत्रों में अर्किल मटर की बुवाई करें।
- गोभी वर्गीय सब्जियो में पत्ती धब्बा रोग के नियत्रंण हेतु मैन्कोजेब का 2.5 ग्रा0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
- टमाटर के मुर्झाने की अवस्था मे ट्राइकोडर्मा हरजियानम या सूडोमोनास फलोरीसेंस का 8 से 10 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर संक्रमित पौधो व उसके आस पास क पौधो मे छिड़काव करे।
- सेब की पत्तियों पर यूरिया 5 प्रतिशत का छिड़काव पत्ते झड़ने की अवस्था से एक सप्ताह पूर्व करें।
- ऊँचाई वाले क्षेत्रों में जंगली खुमानी, आड़ू, मेहल, जंगली नाशपाती, सेब आदि का बीज इकट्ठा करके सुखायें। तद्पश्चात् उचित उपचार के पश्चात् बोने की प्रक्रिया शुरू करें।
- खाद उर्वरक तथा फफूदीनाशक/कीटनाशक दवाईयाँ जो गढ्ढों में भरते समय मिट्टी में मिलाई जाती है का प्रबन्ध उचित मात्रा में कर लें।
- पर्णपाती पौधों में लगाये जाने वाले पौधों की उत्तम किस्मों का आरक्षण अभी से कर ले अन्यथा बाद में अच्छे पौधें न मिलने पर परेशानी हो सकती है।
- थाले बनाने का कार्य प्रारम्भ करें तथा पेड़ के तनों पर चूना + नीला थोथा तथा अलसी के तेल क्रमशः 30 कि0ग्रा0, 500ग्रा0 और 500 मि0ली0 को 100 लीटर पानी में घोलकर जमीन से 2.3 फिट तक पुताई का कार्य करें।

Ik'k|ikyuicU/k%

- पशुओं को ठंड से बचाव हेतु सूखी घास, पुवाल जो जानवरों के खाने के उपयोग में नहीं आती को बिछावन के रूप में प्रयोग करें। खिड़की दरवाजों पर त्रिपाल लगा दें ताकि ठंडी हवा प्रवेश न करें।
- ठंड में पशुओं के आहार में तेल और गुड़ की मात्रा बढ़ा दें। अधिक ठंड की स्थिति में पशुओं को अजवाइन और गुड़ दें।
- पशुओं के बैठने का स्थान समतल होता चाहिए तथा इस समय नवजात पशुओं के रख–रखाव पर विशेष ध्यान दें।
- पहाड़ी क्षेत्रों में पशुशाला में गर्मी हेतु हीटर का उपयोग करें। तथा अंगेठी का उपयोग धुंआँ निकलने के बाद कर सकते हैं।
- मुर्गियों के आवास के तापमान का अनुरक्षण करें।
- पशुओं को धान की कन्नी आहार के रूप में दें। जिससें उन्हें उर्जा और गर्मी मिलती है।

- इस बदलते मौसम में नवजात पशुओं में निमोनिया की संभावना ज्यादा रहती है। इसलिए पशुओं की आवास व्यवस्था को सुदृढ़ करें व आहार में गर्म चीजें दें।
- वर्षा के बाद नाना प्रकार के अन्तः परजीवी आहार नलिका में उत्पन्न हो जाते है। जो पशुओ का आहार स्वंय ग्रहण कर लेते है। अतः सर्वप्रथम निकटतम पशुओ का कृमिनाशक औषधि दें।
- जिन पशुओं में एफ0एम0डी0 (मुखपका खुरपका) रोग के टीके नही लगें है उन पशुओं में तत्काल टीकाकरण करा लें। ताकि आपका पशुधन स्वस्थ रहे और उससे लगातार आपको सही उत्पादन प्राप्त होता रहें।
- खुरपका मुखपका के लक्षण–आँखें लाल होना, तेज बुखार होना (105–107°F), उत्पादन तथा आहार ग्रहण करने की क्षमता में कमी होना, मुहँ में छाले होना,लार गिरना समय से उपचार न मिलने की दशा में पशु के खुरों में घाँव बनना जिसकी वजह से पशुओं का लंगड़ाकर चलना आदि लक्षणों के आधार पर मुखपका खुरपका रोग की पहचान की जा सकती है। रोग के लक्षण पता चलते ही रोगी पशुओं को अन्य स्वस्थ पशुओं से तत्काल अलग कर दें। निकटतम पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार उपचार करायें तथा स्वस्थ पशुओं को चारा देने के उपरांत ही अंत में पीड़ित पशुओं को मुलायम हरा चारा दें। तदुपरांत हाथों को लाल दवा से अच्छी तरह साफ करें।

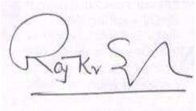

Mk0 vkj0 d0 flg
ik/;kid ,o fifly ukMy vf/kdkjh
xkeh.k df"k eke lok]
xk- c- iUr df"k ,o ik|k- fo'ofo|ky;] iUruxj